The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 8 | August 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शालेय वातावरण पर शैक्षिक दुश्चिंता के प्रभाव का अध्ययन

डॉ. चंकी राज वर्मा
सहायक प्राध्यापक
स्कूल ऑफ एजुकेशन
मैट्स विश्वविद्यालय,रायुपर,छ.ग
chankirajv@gmail.com

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords:
विद्यालय , शिक्षा, मानसिक स्वास्थ्य सर्वांगीण विकास, वातावरण, शारीरिक विकास

ABSTRACT

विद्यालयों में विद्यार्थियों को अनेक प्रकार के नियमों का समय के अनुसार पालन करना अनिवार्य होता है। जैसे स्कूल समय पर पहुंचना, शिक्षकों की आज्ञा मानना, सबसे मित्र पूर्ण व्यवहार एवं सहानुभूति पूर्ण व्यवहार करना एवं शांति के साथ चलना फिरना समय पर खेलकूद एवं अन्य कार्यक्रमों में भाग लेना आदि इन सभी बातों का पालन करना विद्यालयों की स्थापना का प्रमुख उद्देश्य एवं विद्यार्थियों की समस्त शक्तियों का विकास करते हुए उसका सर्वांगीण विकास करना होता है। शिक्षा की परिभाषा व्यापक अर्थ में शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो आजीवन चलती रहती है और जीवन के प्रायः प्रत्येक अनुभव से उसके ज्ञान भंडार में वृद्धि होती है शिक्षा से मेरा भी प्रायः बालक था मनुष्य में निहित शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक श्रेष्ठ शक्तियों का सर्वांगीण विकास है। सर्वोच्च शिक्षा वही है जो संपूर्ण दृष्टि से हमारे जीवन का सामंजस्य स्थापित करती है। शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा की सर्वोच्च सर्वांगीण एवं उत्कृष्ट विकास से है। मनुष्य के अंदर को संपूर्ण रूप से जानना या अभिव्यक्त करना ही शिक्षा कहलाती है। शिक्षा मानव की संपूर्ण शक्तियों का प्रगतिशील सामंजस्य पूर्ण और प्राकृतिक विकास से होता है"। शिक्षा का लक्ष्य मानसिक एवं बौद्धिक विकास को शिक्षा की प्रक्रिया के द्वारा ही सरलता से प्राप्त किया जा सकता है। लेकिन बालक के संवेगात्मक विकास को सुनिश्चित करना भी विद्यालय का उद्देश्य होना चाहिए लेकिन इसके

लिए विद्यालय को अपनी पद्धति का नियोजन करें जिससे बालक का शिक्षा में परिवार के साथ भावनात्मक रूप से जोड़कर अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन करें।

प्रस्तावना – विद्यालय के वातावरण को आकर्षक एवं सुदृढ़ बनाने के लिए प्रमुख व्यक्ति की आवश्यकता होती है। लेकिन वातावरण के दो भाग पढ़ सकते हैं जिसमें भौतिक और मनोवैज्ञानिक है आप देखते हैं कि विद्यालय का भवन भले ही सादा हो उसे आकर्षक बनाया जाता बनाया जा सकता है। यदि विद्यालय बनवाने में बहुत पैसे खर्च होता है इसमें अध्यापकों, विद्यार्थियों एवं अभिभावकों की सहायता नहीं मिले तो भी न्यूनतम अनिवार्य आवश्यकता जुटाना कठिन नहीं होगा हमको बस विद्यालय में यही चाहिए कि स्थान को स्वच्छ और व्यवस्थित रखने में सभी के सहयोग की आवश्यकता होती है। जिसे सुचारू ढंग से चला सके जिससे विद्यालय का सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण भी महत्वपूर्ण होता है।

बालक अपने जन्म से मरते दम तक अनेक समस्याओं का सामना करता है। भारत एक विकासशील देश है जिसमें प्रत्येक क्षेत्र में लगभग संसाधनों की अत्यंत कमी होती है। जो व्यक्ति को अपने जीवन काल में आवश्यकताओं की पूर्ति करने में कठिनाई महसूस करती है। कठिनाई उसके व्यक्तिगत, सांवेगिक एवं सामाजिक कारणों से व्यक्ति में दुश्चिंता उत्पन्न करती है। फ्रायड ने किशोरावस्था के काल को आंतरिक संघर्ष मनोवैज्ञानिक समस्या एवं अनिश्चित व्यवहार का बताया है। किशोर एक तरफ अत्यंत अहंकारी देष में अपने आप को केंद्र में रखने वाले होते हैं वहीं दूसरी तरफ आत्म बलिदान तथा समर्पण करने की क्षमता रखते हैं।

भारत में शिक्षा –

भारतीय शिक्षा का इतिहास को हम देखें तो भारतीय समाज के विकास एवं छात्रावासी एवं गैर–छात्रावासी बालकों के मानसिक स्वास्थ्य, शैक्षिक दुश्चिंता एवं शाला के वातावरण के अनुसार परिवर्तन देखने को मिल सकते हैं। जिससे उनकी शिक्षा में हम निरंतर विकासशील देखने को मिलता है। प्राचीन भारत में शिक्षा व्यवस्था का निर्माण किया गया था। इसी समय भारत की शिक्षा व्यवस्था का ह्रास हुआ क्योंकि विदेशियों के द्वारा भारत की शिक्षा व्यवस्था को जिस अनुपात से विकसित करना चाहिए उस अनुपात से विकसित नहीं हुआ जिससे विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य का सही से विकास नहीं हो पाई। जिससे विद्यार्थियों को शैक्षिक दुश्चिंता का शिकार होते गए और जिसके कारण शाला का वातावरण में भी प्रभाव देखा गयज्ञं

शैक्षिक दुश्चिंता

एक तरह से हम समझना चाहे की दुश्चिंता एक प्रक्रिया में रुकावट समझी जाती है जो व्यक्ति दुश्चिंता से पीड़ित होगा वह व्यक्ति कार्य करने में पूर्ण शक्ति का प्रयोग नहीं कर सकता। इसीलिए यह विचार किया जाता है कि दुश्चिंता क्रिया में रूकावट डालती हैं, जिसके कारण सीखने की गति में कमी आ जाती है लेकिन यह जो विचार हैं वह पूरी तरह से सत्य नहीं है। दुश्चिंता के कार्य को ठीक से नहीं समझने के कारण है क्योंकि दुश्चिंता सीखने में रुकावट डाल सकती है और प्रेरित भी कर सकती है। दुश्चिंता से व्यक्ति में किसी एक वास्तविक, काल्पनिक अथवा भयसूचक स्थिति के कारण आने वाले समय में एक दूसरे के प्रति अतिरंजित आशंका से उत्पन्न भय से ग्रस्त संवेगात्मक स्थिति का बोध होता है। आधुनिक भौतिक युग विभिन्न प्रकार की अपार सुख–सुविधाओं और विलासिता के साधनों से परिपूर्ण है। आप देखेंगे कि मानव जीवन का रंग–ढंग कुछ इतना अधिक विषम तथा संघर्ष में बन गया है, सामान्य व्यक्ति का व्यवहार में संघात्मक तनाव एवं खिंचाव के कारण व्यक्ति के व्यक्तित्व का स्थाई अंग ही बना गया है।

आशंका यह है कि सामान्यीकृत अवस्था को चिंता कहते हैं। सामाजिक संबंध, स्वास्थ्य एवं परीक्षा आदि से संबंधित आशंका या भय की सामान्यीकृत स्थिति को चिंता कहते हैं। जब तक व्यक्तियों में चिंता का स्तर एवं शैक्षिक विषमता का स्तर सामान्य रहता है, तब तक व्यक्ति का निष्पादन बेहतर होता है। लेकिन शैक्षिक दुश्चिंता का स्तर के अधिक बढ. जाने पर निष्पादन बाधित होने लगता है। और इसे असामान्य दुश्चिंता कहते हैं ऐसी स्थिति में दुश्चिंता का प्रतिफल प्रभाव पड़ता है।

शालेय वातावरण –

जब बालक जन्म लेता है तो वह असामाजिक और आदर्श का निर्वाह बालकों में हमें देखने को मिल सकता है और ना ही उसे अपनी किसी संस्कृति का ज्ञान होता है। लेकिन तो भी बालक किसी भी तरह से बड़ा होते जाता है, और सामाजिक प्राणी बनता जाता है किसी भी बालक को एक सामाजिक व सांस्कृतिक मानव बनाने में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान होता है। शिक्षा व्यक्तियों का विभिन्न प्रवृत्तियों का शोधक और बालकों को सही मार्ग दिखाकर समाज का एक सक्रिय सदस्य बनाती है। जिससे बालक अपने सभी उत्तरदायित्व का पालन सही ढंग से कर सकता है शिक्षा मनुष्य के विकास का एक अच्छा साधन होता है। शिक्षा के द्वारा मनुष्य अपने जन्मजात शक्तियों का विकास करती है, जिससे बालकों का ज्ञान एवं कौशल का विकास सही तरीके से होता है शिक्षा के द्वारा ही अपने ज्ञान एवं व्यवहार में परिवर्तन ला सकता है। जिसके कारण सभ्य सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बन सकता है, शिक्षा प्राप्त करके ही मनुष्य विवेकशील बन पाता है। जिस प्रकार पौधों का विकास खेती की अच्छी जुदाई से होती है उसी तरह से मनुष्य का विकास शिक्षा द्वारा होता है।

अध्ययन की आवश्यकता –

छात्रावासी एवं गैर–छात्रावासी विद्यालय का परिवेश और छात्राओं की उपलब्धियों में अत्यधिक सुस्पष्ट सहसंबंध होता है। विद्यालय वातावरण से विद्यार्थी की बहुत कुछ अपेक्षाएं होती है। उन्हीं सभी अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए भरसक प्रयास करता है। विद्यार्थियों को प्रेरक एवं मुक्त परिवेश छात्रों के विचारों एवं अभिव्यक्ति की पूरी स्वतंत्रता प्रदान करता है। यह छात्रों की सकारात्मक दृष्टिकोण तथा कार्य निष्पादन से सभी पक्षों में पर्याप्त रूप से प्रतिबिंबित होती है।

शाला का वातावरण शाला के स्तरों को उन्नत करने के लिए एक महत्वपूर्ण निवेश है कक्षा के कमरे में शिक्षण अधिगम के प्रभावकारी केंद्र बने उसके लिए विद्यालयों की सहायता अवश्य की जानी चाहिए। जिससे शालाओं में मुक्त परिवेश दे सके। जिससे अध्यापक एकत्रित होकर बिना शिकायत के अच्छा काम कर सकें। अपने कार्य में संतुष्टि होती रही जिससे स्वतः पर्याप्त मात्रा में अभिप्रेरित होते रहे।

अध्ययन का औचित्य –

छात्रावासी एवं गैर–छात्रावासी विद्यालय में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक दुष्चिंता से शालाओं के वातावरण से विद्यार्थियों को सीखने में प्रभाव डाल सकता है। विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास में शालाओं का महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जिसमें विद्यार्थियों के मानवीय गुणों का विकास करना और विद्यार्थियों को सुयोग्य, सुचरित्र नागरिक बनाने में चुनाव का महत्वपूर्ण योगदान होता है। जिससे विद्यार्थी का मानसिक स्वास्थ्य पर भी इतना प्रभाव पड़ता है। शाला का वातावरण विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती है। जिससे शालाओं के अध्यापक का व्यक्तित्व विकास एवं पाठ्य सहगामी क्रियाएं शिक्षण विधियों का प्रयोग एवं विद्यालय का सामान्य वातावरण से बालकों के शैक्षिक विषमता को दूर भी किया जा सकता है। यह सब बालक के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव डालता है शाला ही एक ऐसा स्थान है जहां बालकों का मानसिक विकास सही तरीके से हो पाता है। इसीलिए कहा गया है कि बालकों में शैक्षिक दुश्चिंता आने पर भी शिक्षा के द्वारा बालकों का सर्वांगीण विकास करना आवश्यक होता है। शाला में आप देखेंगे कि शिक्षक तथा वहां का वातावरण सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है लेकिन शाला एक ऐसा स्थान है जो विद्यार्थी के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर विद्यार्थी के विकास में अपना सहयोग दे सकते हैं।

अध्ययन का महत्व –

शालेय वातावरण विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने में बहुत महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। छात्रावासी गैर–छात्रावासी विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सहानुभूति, प्रेम, सद्भावना और सहयोग से ओतप्रोत होता है। विद्यार्थियों में जाति–भेद, ऊंच–नीच की भावना नहीं होनी चाहिए। प्रत्येक बालक चाहे वह छात्रावासी हो या गैर–छात्रावासी शालाओं में अपने आप को सुरक्षित अनुभव करते हैं। विद्यालय का वातावरण

विद्यार्थियों के समूह भावना का विकास करें जिससे विद्यार्थियों में अपने शैक्षिक परिणामों एवं अपने भविष्य के प्रति विद्यार्थियों में चिंता होती रहती है। आज के समय के अनुसार समाज में अपने गुणों तथा योग्यताओं के अनुरूप विषयों का चयन करने के लिए अनेक अवसर प्रदान किए जाते हैं। ऐसी स्थिति में विद्यार्थियों में निर्णय लेने की गतिशील प्रक्रिया को शिक्षक एवं अभिभावक को समझना होगा। जिसे विद्यार्थी अपने विवेकपूर्ण ढंग से अपने विषय के बारे में सही एवं उपयुक्त तरीके से अध्ययन करते हुए उपयुक्त शैक्षिक परिणामों को प्राप्त करें। इस स्तर पर प्राप्त शैक्षिक स्तर पर उसके शैक्षिक परिणामों में प्रभाव डालेगा। जिससे विद्यार्थी का शैक्षिक दुश्चिंता से व्यक्तित्व का समुचित विकास संभव नहीं है इसके लिए मानसिक रूप से स्वस्थ बालक सामाजिक परिवारिक संवेगात्मक तथा व्यवसायिक जीवन में समायोजन करने में सफल होता है। यदि कोई बालक मानसिक द्वंद–चिंता और मनोग्रंथियों से पीड़ित हो तो उसके लिए समायोजन करना संभव नहीं समायोजन का अभाव उसके व्यक्तित्व को विघटित कर सकता है अतः व्यक्तित्व का संगठन मानसिक स्वास्थ्य के द्वारा ही प्राप्त हो सकती है।

अध्ययन की सार्थकता –

किसी भी छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यालय का वातावरण एवं वहां के शिक्षा का स्वरूप बालक की योग्यता तथा क्षमता को प्रभावित करती है। छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी दोनों विद्यालय में भिन्न–भिन्न आदत के बालक भिन्न–भिन्न रुचि और दृष्टिकोण रखने वाले विद्यार्थी आते हैं। जिस तरह से बालक का शारीरिक विकास होता है लेकिन बाहरी वातावरण के संपर्क में आने से छात्रावासी विद्यार्थी के शारीरिक एवं मानसिक परिवर्तन देखने को मिलता है। इसके परिवर्तन से शाला का वातावरण तथा बाहरी वातावरण का प्रमुख योगदान होता है। अभी हम देखें तो सभी स्तरों में स्पर्धा का माहौल है विद्यार्थियों में भी हमें यह देखने को मिलता है। इस स्पर्धा के कारण बाकी अपने सहपाठियों से पीछे रहना पसंद नहीं करते और साथ ही आगे अच्छी संस्था में प्रवेश के लिए प्रयास करते हैं। जिसमें उनको रोजगार उपलब्ध हो सके लेकिन कई विद्यार्थियों को रोजगार नहीं मिल पाने से शैक्षिक रूप से चिंतित रहते हैं। अच्छा पढ़ाई लिखाई और परिणाम अच्छा प्राप्त करने से शाला का वातावरण की उपस्थिति अनिवार्य है। सभी संबंधित शोध अध्ययनों को देखने से यह स्पष्ट होता है कि प्रस्तावित शोध समस्या पर छात्रावासी एवं गैर–छात्रावासी बालकों की मानसिक स्वास्थ्य शैक्षिक दुश्चिंता पर शालेय वातावरण का प्रभाव एवं शोध अध्ययन का अभाव पाया गया। इस शोध में इसके अभाव की पूर्ति का माध्यम बना है प्रस्तुत अध्ययन से यह ज्ञात होगा कि शाला का वातावरण मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक दुश्चिंता को प्रभावित करता है। इसके परिणाम से छात्रावासी एवं गैर–छात्रावासी विद्यार्थियों, शिक्षकों, अभिभावकों, प्रशासकों एवं शैक्षिक नीति निर्धारणों के मार्गदर्शन हेतु लाभप्रद होंगे। विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में वृद्धि हेतु प्रयास किए जा सकेंगे तथा शालेय वातावरण इस प्रकार निर्मित किए जा सकेंगे जिससे कि विद्यार्थियों में शैक्षिक क्षमता कम हो सके।

अध्ययन का उद्देष्य :–

1. छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यालय के विद्यार्थीयों की शालेय वातावरण एवं शैक्षिक दुष्चिता के मध्य संबंध का अध्ययन करना।

2. छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यालय के विद्यार्थीयों की शैक्षिक दुष्चिता एवं शालेय वातावरण के मध्य संबंध का अध्ययन करना।
3. छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यालय के विद्यार्थीयों की शैक्षिक दुष्चिता एवं लिंग एवं परिवेष के मध्य संबंध का अध्ययन करना।
4. छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यालय के विद्यार्थीयों की शालेय वातावरण एवं लिंग एवं परिवेष के मध्य संबंध का अध्ययन करना।

अध्ययन की विधि –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी के द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। शोध एक ऐसा व्यवस्थित तथा नियंत्रित अध्ययन है। जिसके अंतर्गत संबंधित चरो व घटनाओं के पारस्परिक संबंधों का अन्वेषण तथा विश्लेषण उपयुक्त सांख्यिकीय विधि तथा वैज्ञानिक विधि के द्वारा किया जाता है। जिससे प्राप्त परिणाम से वैज्ञानिक निष्कर्ष, नियम तथा सिद्धांतों की रचना, खोज व उसकी पुष्टि की जाती है।

सुझाव –

प्रस्तुत शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर कुछ सुझाव प्रस्तुत है–

1. किसी भी राष्ट्र में अध्यापक निर्णायक स्थिति में होते हैं क्योंकि वे ही भावी नागरिकों का निर्माण करते हैं।
2. बालकों को अपने लक्ष्य, योग्यता, क्षमता व बालकों के रूचि के आधार पर निर्णय लेना चाहिए ना कि दूसरों का अनुसरण करना चाहिए।
3. बच्चों के अध्ययन के समय स्कूलों का वातावरण पर प्रमुखता ध्यान देना चाहिए।
4. अभिभावकों को अपने बालकों के लिए उचित समय निकालने और उन्हें उपेक्षित ना करें।
5. बच्चों के अभिभावक दूसरों के सामने अपने बच्चों की कमजोरियों के बारे में बात न करें इससे बच्चों में हिन की भावना आ जाती है।
6. प्राचार्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालय या बाकी स्कूलों के एक समूह बनाकर कम से कम एक निर्देशन व परामर्श केंद्र खोला जाए, जिससे प्रशिक्षितों के द्वारा छात्र–छात्राओं को लाभ प्रदान करना चाहिए।
7. छात्रावासी एवं गैर–छात्रावासी विद्यालय में निर्देशन एवं परामर्श केंद्र की स्थापना करने का उचित प्रयास करना है।
8. स्कूल स्तर पर यदि संभावना हो तो यथासंभव संकुल स्तर पर परामर्शदाता की नियुक्ति की जाए। इस हेतु आवश्यक है कि निर्देशन एवं परामर्श प्रशिक्षण केंद्रों में वृद्धि की जाए।

संदर्भ सूचि :–

- चौहान रीता, पाठक पी. डी. – अधिगमकर्ता एवं अधिगम प्रक्रिया, पेज नं. 76–79
- राव, एन. पापा. – अधिगमकर्ता एवं अधिगम प्रक्रिया, पेज नं. 102–103
- शिक्षण – मरिअम वेबस्टर ऑनलाइन शब्दकोश – वेबैक मशीन, पेज नं. 45–47
- यादव, सियाराम – अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, शारदा पुस्तक सदन, इलाहाबाद, – पेज नं. 442–447
- कुमार सुनील दुश्चिन्ता (2016–July) – संकल्पना, कारण, तथा दूर करने के उपाय,
- खिंची पूजा – उच्च माध्यमिक एवं माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सहसंबंध का अध्ययन– बियानी गर्ल्स बी. एड. कालेज, जयपुर(राजस्थान)
- भारतीय शिक्षा का इतिहास - hi-wikipedia-org@wiki@
- राव, एन. पापा. – शिक्षा के समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य, पेज नं.– 44,45
- षिक्षण – मरिअप वेबस्टर ऑनलाइन शब्दकोष से
- सिन्हा पवन (2015, अक्टूबर) – भारतीय आधुनिक षिक्षा, मोतिलाल नेहरू कॉलेज साउथ केम्पस दिल्ली विष्वविद्यालय,